# मंत्र विज्ञान–शक्ति व जाग्रति

भारतीय संस्कृति के प्रेरक–प्रणेता ऋषियों की अगणित उपलब्धियों में मंत्र विद्या का मूल्य एवं महत्व अद्वितीय है। ऋषियों के अनुभूत कोष स्पष्ट करते हैं कि, विश्वव्यापी ब्रम्ह–चेतना के साथ मनुष्य का सघन व सुनिश्चित संबंध है, पर उसमें कषाय–कल्मष जैसे अवरोधों ने विक्षेप जैसी स्थिति पैदा कर दी है। बिजलीघर व कमरे के पंखे के बीच लगे तारों में यदि कहीं गड़बड़ी उत्पन्न हो जाये तो पंखा व बिजली अपने–अपने स्थान पर रहते हुये भी सन्नाटा छाया रहेगा। मंत्र साधना इन शिथिल संबंधों को पुनः प्रतिष्ठापित करने की सुनिश्चित पद्धति है। विश्व चेतना के साथ व्यक्ति को जोड़ने वाला राजमार्ग है।

मंत्र विद्या के प्रख्यात ग्रन्थ ''मंत्र महार्णव'' में इन दोनो तत्वों को ही स्वीकारा गया है। इसके अनुसार मंत्र का अर्थ है मनन, विज्ञान, विद्या व ज्ञान। मंत्र शक्ति से मनन का स्वभाव मिलता है, मनन कहते है बार–बार विचारने को जिस विचार को बार–बार मन में जमाने की कोशिश की जाती है वह मन का स्वभाव बन जाता है। अतः मंत्र शक्ति मन तद्नुरुप ढ़लता है साथ ही शक्ति का उद्भव होता है।

मंत्र विज्ञान में शब्दों का चयन ध्वनि विज्ञान के आधार पर किया जाता है। मंत्र विद्या के वैज्ञानिक (ऋषिगण) जानते थे कि, मुख से जो शब्द निकलते है उनका उच्चारण कंठ, तालू, मूर्धा, ओष्ठ, दंत व जिव्हामूल आदि मुख के विभिन्न अंगों द्वारा होता है। इस उच्चारण काल में मुख के जिन भागों से ध्वनि निकलती है, उन अंगों के नाड़ी, तंतु व ग्रंथियों पर उच्चारण का दबाव पड़ता है और उससे संबंधित शक्तियों का जागरण होने लगता है।

शब्दों का ध्वनि प्रवाह कोई तुच्छ चीज नहीं है। शब्द को ब्रम्ह कहा गया है, जिस तरह घड़ी का लटकन घंटा पेंडुलम झूमता हुआ घड़ी के पुर्जो में चाल पैदा करता है उसी तरह ऊँकार ध्वनि प्रवाह सृष्टि को चलाने वाली गति पैदा करता है। आगे चलकर इसकी तीन प्रधान धारायें सत, रज व तम बहती हैं। ये तीनों धारायें अपने–अपने क्षेत्र में सृष्टि का संचालन करती हैं। मंत्रों की शब्दावली भी ऐसे चुने हुये शब्दों से निर्मित है, जिसके कारण शरीर के विभिन्न भागों में अवस्थित यौगिक लघु चक्र जाग्रत हो जाते हैं व मनुष्य योगी बनता है। जिस तरह दीपक राग से बुझे दीपक जल उठते हैं। वेणुनाद सुनकर सर्प लटलटाने लगते है। मृग सुधि भूल जाते है।

सैनिकों के कदमताल से पुल टूटने की संभावना बनी रहती है। उसी तरह मंत्र भी अपनी शक्ति से संबंधित शक्ति देवता को साधक की ओर आकर्षित करते हैं।

मंत्र प्रक्रियाओं की अनेकानेक विशेषताओं में सर्वाधिक महत्ता उसके स्फोट में है। स्फोट का मतलब है, ध्वनि विशेष का ईथर तत्व में होने वाला असाधारण प्रभाव। अणु विस्फोट से उत्पन्न भयावह शक्ति की जानकारी हम सभी को है। वर्तमान बोलचाल में विस्फोट शब्द जिस अर्थ में प्रयुक्त होता है लगभग उसी में संस्कृत में स्फोट का प्रयोग किया जाता है। शब्द स्फोट से ऐसी ध्वनि तरंगे उत्पन्न होती हैं जो कानों की श्रवण शक्ति से परे हैं। शब्द आकाश का विषय है। अतः मांत्रिक जब मंत्र का लयबद्व प्रयोग करता है तब मंत्रों का संगीत प्रवाह ईथर तत्व में फैलता है और कुछ ही क्षणों में विश्व ब्रम्हांड की परिक्रमा करके वापिस आते–आते स्वजातीय तत्वों की सेना ले आता है, जो साधक की अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होते है।

ईथर तत्व में शब्द प्रवाह का संचरण रेडियों द्वारा अनुभव किया जा सकता है पर उसे देखना संभव नहीं। उसी तरह मंत्र में उच्चारित शब्दावली मंत्र की मूल शक्ति नहीं बल्कि अंतरंग व अंतरिक्ष में भरी अगणित चेतना शक्ति को सजग करने का उपकरण मात्र है। मंत्र दृष्टाओं ने मंत्रों में शब्दों का चयन यह ध्यान रखते हुये किया था कि, उनका उच्चारण जपकर्ता के वहिरंग व अंतरंग पर क्या प्रभाव डालता है।

मंत्र जप की प्रक्रिया भीतर व बाहर दोनो जगह होती है। जिस तरह आग जहाँ लगती है उस स्थान को व समीपवर्ती वायुमंडल को गर्म करती है उसी तरह शरीर में जहाँ भी चक्र व उपत्किाओं का समूह है वहाँ एक विशिष्ट स्तर की शक्ति प्रवाहित होने लगती है और साधक उससे लाभान्वित होता है। वैज्ञानिक, मांत्रिक व तांत्रिक तीनों ही अपने–अपने क्षेत्र में भिन्न–भिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सुव्यवस्थित ऊर्जा ढूंढ़ते हैं।

वैज्ञानिक भौतिक जगत की ऊर्जा को व्यवस्थित कर संसाधनों की वृद्वि करता है तो योगी मांत्रिक आध्यात्मिक जगत की ऊर्जा पैदा कर अपने लक्ष्य की पूर्ति करते हैं और तांत्रिक भौतिकीगत ऊर्जा पैदा करता है। हमारे ऋषियों ने ऊर्जा के विभिन्न स्तरों का पता लगाकर सूक्ष्म जगत में अनुसंधान कर मंत्रों के देवताओं की प्रकृति के अनुसार चुना।

जिस तरह यंत्र को चलाने के लिये ईधन की आवश्यकता होती है, उसी तरह मंत्रों की सफलता भी आध्यात्मिक ऊर्जा व परिष्कृत व्यक्तित्व पर निर्भर करती है। जैसे जमा हुआ मोम तेल

में नहीं मिलता किंतु अग्नि में पिघला देने से वह तेल में घुलमिल जाता है, उसी तरह सूक्ष्म शक्तियां हरेक को प्राप्त नहीं होती किंतु साधना द्वारा अपने अन्तः स्थल को पिघला देने पर ये दुर्लभ शक्तियां आत्मसात् हो जाती हैं। इस तरह ध्वनि की शक्ति बीज मंत्रों का कम्पन व साधक की संकल्प शक्ति का समुच्चय ही मंत्र विज्ञान का आधार बना।

मंत्र विनियोग के 5 अंग है :–

1. ऋषि। 2. छन्द। 3. देवता। 4.बीज व 5. तत्व।

इन्हीं तत्व का अर्थ है ऐसी मार्गदर्शक सत्ता जिसे उस मंत्र में सिद्वि हो। जिस तरह संगीत, सर्जरी, नौकायान आदि विद्या बिना गुरु की सहायता से नहीं सीखी जा सकती, उसी तरह मंत्र सिद्वि के लिये भी गुरु की आवश्यकता अनिवार्य है। गुरु ही मंत्र सिद्वि में शिष्य की मनोभूमि, उसमें होने वाले उतार–चढ़ाव को ध्यान में रखकर मंत्र–सिद्वि में शिष्य की सहायता करता है।

छन्द का अर्थ है, लय। ध्वनि तरंगों का कम्पन लय पर निर्भर है। मंत्र का तीसरा चरण देवता अर्थात् चेतना सागर से अपने अभीष्ट शक्ति प्रवाह का चयन। जिस तरह आकाश में एक समय में ही अनेक रेडियो स्टेशन बोलते है। हरेक की फ्रीक्वेन्सी अलग–अलग होती है। ऐसा न हो तो ब्राडकास्ट किये गये सभी शब्द मिलकर एक हो जाते और हम मनचाहा कार्यक्रम नहीं सुन पाते। ठीक इसी तरह मंत्रों के माध्यम से हम अभीष्ट प्रयोजन हेतु संबंधित देवता के मंत्र का प्रयोग करते हैं और लक्ष्य की प्राप्ति करते हैं।

बीज से अर्थ है, उद्‌गम। मंत्र को किस विधि से प्रभावित करें इसकी जानकारी बीज विज्ञान देता है। इसे किसी मंत्र में शक्ति भरने वाले इंजेक्शन कह सकते है। हीं, श्रीं, क्लीं, ऐं आदि बीज मंत्रों में अर्थ से नहीं ध्वनि से ही प्रयोजन सिद्व होते हैं।

जिस तरह सूर्य के सात रंगों में से हम जिसे चाहें उसे रंगीन बोतलों के माध्यम से पकड़कर लाभान्वित होते हैं। हंस दूध पीता है और पानी छोड़ देता है, उसी तरह मंत्र भी संबंधित देवता (शक्ति) को अपनी ओर आकर्षित करता व शेष को छोड़ देता है। देवता की स्थापना, पूजन, कीर्तन, स्तवन आदि क्रियाओं का यही प्रयोजन होता है। प्राचीन काल में योगी, ऋषि व तत्वदर्शियों ने मंत्रवल से ही पृथ्वी देवलोक व ब्रम्हांड की अनंत शक्तियों पर विजय पाई थी। मंत्र शक्ति के प्रभाव से वे इतने समर्थ हो गये थे कि, इच्छानुसार किसी भी पदार्थ का हस्तान्तरण करना, शाप या

वरदान देना, शब्दों के कम्पन से विष निवारण, अदृश्य शक्तियों का आकर्षण, मारण, मोहन, उच्चारण आदि सफलतापूर्वक करते रहे। महाभारत काल में मंत्र प्रेरित शस्त्रों की मार होती थी, उससे परमाणु बमों से भी भयंकर ऊर्जा उत्पन्न होती थी व उस शक्ति से सैनिकों के समूह के समूह नष्ट हो जाते थे। हजारों की भीड़ में से छिपे दुश्मन को अकेले मारा जा सकता था, उस शब्द विज्ञान की थोड़ी सी जानकारी ही आज का भौतिक जगत् जान पाया है।

हमारे वेद मंत्र विज्ञान ही हैं, जिसमें विराट् ब्रम्ह की अलौकिक सूक्ष्म शक्ति व चेतना से संबंध स्थापित करने के गूढ़ रहस्य दिये गये हैं।

वस्तुतः स्थूल वस्तु की सहायता से स्थूल को पकड़ने की विद्या सब जानते हैं जैसे :– हाथ से कलम पकड़ना, चिमटे से अग्नि पकड़ना, पर अदृश्य वस्तु को पकड़कर उससे लाभ उठाने की कला विरले ही जानते है। जिस तरह वैज्ञानिक आविष्कार के पूर्व बिजली, गैस, भाप व परमाणु आदि थे, पर लोग उन्हें पकड़ना नहीं जानते थे। अतः उससे प्राप्त लाभों से बंचित थे। हमारे वैज्ञानिकों ने कोई नई चीज का आविष्कार नहीं किया बल्कि उन चीजों से लाभ उठाने की विधि विकसित की है। इसी तरह दैवीय शक्ति यंत्रों की पकड़ के बाहर है, हमारे ऋषियों ने मंत्रों द्वारा उन्हें पकड़ा व लाभ उठाया है।

मानव के सर्वांगीण कल्याण हेतु ऋषियों ने गायत्री मंत्र को महामंत्र बताया है। सारे मंत्र इसके अधीन है। शब्दों की दृष्टि से इस मंत्र का भावार्थ सरल है, ऊँ परमात्मा का स्वयं भू स्वउच्चारित नाम। गायत्री मंत्र में भौतिक शरीर, सूक्ष्म शरीर व कारण शरीर को श्रेष्ठ बनाने हेतु सविता देवता से सद्बुद्वि देने की कामना की गई है। ऋषियों ने इसे तारक मंत्र बताया है और कहा है जो इसकी शरण पकड़ेगा उसे भवबंधन से, भवसागर से उबरते देर नहीं लगेगी। यह महाशक्ति उसे डूबने से बचा लेगी। शंख स्मृति में उल्लेख है :–

गय या परमं नास्ति दिविचेत च पावनम्
हस्त त्राणं प्रदा देवी पततां नरर्वीणवे ।।

अर्थात् नरक रुपी समुद्र में गिरते हुये को हाथ पकड़कर बचाने वाली गायत्री के समान पवित्र करने वाली वस्तु इस पृथ्वी तथा स्वर्ग में कोई नहीं है। गायत्री मंत्र के शब्दार्थ से भी प्रकट है गय। अर्थात् प्राण और ''त्री'' अर्थात् त्राण करने वाली। जो प्राणों का परित्राण, उद्वार व संरक्षण करे वह गायत्री।

गायत्री महामंत्र में शब्दों का गुंथन कुछ इस प्रकार वैज्ञानिक विधि से हुआ है कि, उसके जप से साधक की अन्तः चेतना में सविता देवता सूर्य तेज भर्ग के समाविष्ट होने से प्रसुप्त सूक्ष्म संस्थानों में जागृति आती है, जिससे सभी कषाय–कल्मष धुलते चले जाते हैं। सौर चेतना का अविरल प्राण–प्रवाह होने लगता है और देवी वरदानों की भांति सद्बुद्वि प्राप्त होती है। गायत्री मंत्र के साधक अनुभव करते हैं कि, कोई अज्ञात शक्ति रहस्यमय ढंग से उनके मनः क्षेत्र में नवीन ज्ञान, प्रकाश, उत्साह आश्चर्यजनक रीति से बढ़ा रही है। गायत्री साधना से तत्काल आत्मबल प्राप्त होता है।

निष्कर्षतः मंत्र अदृश्य शक्तियों को पकड़कर लाभ उठाने की प्रक्रिया है, जिससे जीवन को विभिन्न प्रयोजन सिद्व होते हैं। इन्हें साधक, श्रद्धा व विश्वास रुपी हाथों से ही ग्रहण कर सकता है।

डॉ. श्रीमति कुसुम गुप्ता,
21, गायत्री नगर, ग्वालियर

♦ ♦ ♦ ♦ ♦